Vol 4 Issue 2 Aug 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-2 | Aug-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोणों का अध्ययन

प्रमोद कुमार राजपूत

हे.न.ब.ग. विश्वविद्यालय (केन्द्रीय) , श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

सारांश :-एक प्रगतिशील, आधुनिक समाज के लिये यह आवश्यक है कि स्कूलों में यौन शिक्षा एक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शामिल करने तथा किशोरावस्था के छात्र–छात्राओं को शिक्षा देने के लाभ तथा हानि दोनो है, यह एक जटिल एवं कठिन विषय है। उपरोक्त तथ्यों के दृष्टिगत रखते हुये शोद्यार्थी ने इस समस्या को शिक्षकों एवं छात्रों के समक्ष रखते हुये उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया है, इसके लिये शोद्यार्थी ने शोध को मु.नगर शहर के उत्तर प्रदेश बोर्ड एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद में अध्यापनरत शिक्षकों एवं छात्रों के विचार को जानने एवं उनका विश्लेषण करने पर जो परिणाम निकला कि अधिकांश शिक्षक एवं छात्र, यौन शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में स्थान देने एंव पाठ्यक्रम को उचित वैज्ञानिक विधियों एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से निर्देशन एवं परामर्श देकर यौन शिक्षा देकर युवाओ को कुमार्ग से सत्मार्ग की ओर अग्रसर कर उनका समेकित विकास करके सामाजिक नागरिक में परिवर्तित कर सकते है।

मुख्य–शब्द : UP Board, CBSE, FPAI, NCERT.

प्रस्तावना :-

बालक जैसे–जैसे बडा होकर बाल्यावस्था से किशोरावस्था में कदम रखता है, तो उसमें अनेक प्रकार के शारीरिक व मानसिक परिवर्तन आते है साथ में उत्पन्न होती है अनेक प्रकार की जिज्ञासा एवं असमजंस की स्थिति। उसे इन परिवर्तनों के विषय में जानने के लिए एक विशेष प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता होती है। वैसे तो माता–पिता बालक को शुरू से ही अनेक प्रकार की शिक्षा देते है, परन्तु वह शिक्षा नहीं देते है, जो किशोरावस्था में होने वाले उन परिवर्तनों को समझने में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करे।

किशोरावस्था जीवन के प्रथम चरण की पुनरावृत्ति मानी जाती है, इस समय बालक अस्थिर हो जाता है, उसका शाररिक व मानसिक व्यवस्थापन पुनः अस्त–व्यस्त हो जाता है, क्योकि इस अवस्था में बालक में अनेक परिवर्तन होते है, जैसे–शारीरिक परिवर्तन मानसिक परिवर्तन।

किसी नये परिवर्तन के लिए जिज्ञासा मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। इन परिवर्तनों के बारे मं जानने की जिज्ञसा उसके मन में होती है। इन जिज्ञासाओं की पूर्ति यौन–शिक्षा के द्वारा हो सकती है और उनकी समस्याओं के समाधन में सहायक भी होती है।

यौन–शिक्षा द्वारा बाल की यौन–प्रवृत्ति व इच्छाओं का दमन करके बल्कि उचित दिशा में शोधन (Submiliation) व मार्गीन्तीकरण कर उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जाये और वह पारिवारिक जीवन में प्रवेश करें तो न केवल परिवार के सदस्य, पति, पिता के रूप में सुखी जीवन व्यतीत कर, बल्कि समाज का एक अच्छा सदस्य व देश का अच्छा नागरिक बनकर अपने तथा परिवार, समाज व राष्ट्र को प्रगति के मार्ग में ले जाने के लिए अग्रसर करेगा।

यौन–शिक्षा वह आधर निर्मित करती है, जो स्त्री–पुरूष व पति–पत्नी है, और उन्हें एक ऐसा ज्ञान व ऐसी दूरदर्शिता प्रदान करती है जो उनके बीच किसी भी प्रकार का कोई भ्रम पैदा नही होने देती है। यह यौन–शिक्षा स्त्री पुरूष के परस्पर सम्बन्धों एवं दायित्वों को समझने के लिए आवश्यक है। अतः यौन–शिक्षा बालकों के शारीरिक व मानसिक विकास के साथ–साथ पारिवारिक मधुरता एवं जनसंख्या नियन्त्रण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राएं अत्यन्त कल्पनाशील व दिवास्वप्न देखने वाले होते है, अतः उनकी सभी समस्याओं व जिज्ञासाओं के समाधान के लिए उचित निर्देशन व उचित दिशा की आवश्यकता है, इस स्तर पर छात्र व छात्राएं अपने विपरीत लिंगीय के प्रति आकर्षित होते है। अतः उनके इस आकर्षण को अनुचित न समझकर उन्हें इस आकर्षण का कारण बताया जाएं। हमारी अनेक सामाजिक मर्यादाओं के कारण छात्र व छात्राएं अपने अभिभावक व शिक्षक से इस विषय पर बात करने में

संकोच करते है। उच्चतर माध्यमिक स्तर यौन शिक्षा के गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

समस्या कथन–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन–

मुख्य प्रत्ययों की कार्यकारी परिभाषा–

उच्चतर माध्यमिक– सामान्यतः माध्यमिक वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में उच्तर माध्यमिक स्तर का आशय है कि कक्षा 11 एवं 12 के स्कूलों के अध्ययन से है।
यौन–शिक्षा–यौन–शिक्षा का आशय है, लैंगिक विकास की प्रक्रिया के बारे में जानकारी तथा उसकी समझदारी।''प्रस्तुत अध्ययन में यौन–शिक्षा कों इस रूप में लिया गया है, जिसमें विद्यार्थियों को लैंगिक विकास एवं शारीरिक परिवर्तनों के प्रति जागरूक किया जाता है। इसका सम्बन्ध मानव यौन–व्यवहार से है जो एक बच्चे को एक स्वस्थ तथा जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में विकसित करता है। एक विषय के रूप में यौन–शिक्षा जीव–विज्ञान, मनोविज्ञान तथा सामाजिक और विज्ञान का मिश्रण है।
पाठ्यक्रमः–सामान्यतः पाठ्यक्रम का अर्थ है, ऐसा क्रम जो पढने योग्य हो, अथवा ऐसा क्रम जिसकी सहायता से छात्र अपनी शिक्षा के विभिन्न सोपानों पर चढे। अतः पठनीय सामग्री को सुव्यवस्थित रूप से पाठ्यक्रम कहलाता है।
शिक्षकः– शिक्षक वह होता है, जो छात्र को पाठ्यक्रम को अनुसरण करने योग्य बनाता है। शिक्षक से तात्पर्य उत्तर–प्रदेश माध्यमिक–शिक्षा परिषद, इलाहाबाद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में वर्तमान पढा रहें व्यक्तियों से है।
विद्यार्थीः–उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयो में अध्ययनरत कक्षा 11 व 12 के छात्र–छात्राएं प्रस्तुत शोध में विद्यार्थी का आशय वर्तमान अध्ययन में विद्यार्थी विभिन्न विद्यालयों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों मात्र से है लिया गया है।
दृष्टिकोणः–प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त दृष्टिकोण का आशय है, कि यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षक एंव विद्यार्थी क्या विचार रखते है।

अध्ययन का परिसीमन–

समस्या का स्वरूप साधारण तथा अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिये उसका सीमांकन करना आवश्यक होता है।

1.प्रस्तुत शोध केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है।
2.प्रस्तुत शोध केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तक ही सीमित है।
3.प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र मुजफ्फरनगर शहर की सीमाओं तक ही सीमित है।

उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में सम्पन्न किया गया–

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों एंव विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानना।
2.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षको के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति विद्यार्थियों के मतों का पता लगाना।
4.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से शिक्षकों–विद्याार्थियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
5.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति मनो शारीरिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मतो को जानना।
6.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बारे में अध्ययन करना।
7.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति नैतिक–आध्यात्मिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मतो का पता लगाना।

परिकल्पना–

प्रस्तुत शोध में जो परिकल्पना ली गयी है, वे इस प्रकार है–

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के समग्र दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के सामान्य विचारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति मनो–शारीरिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों मतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं है।
5.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति नैतिक–आध्यात्मिक दृष्टिकोण से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की सोच में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की रूपरेखा–

शोध की कार्यविधि, न्यादर्श का विवरण, आंकडों के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण प्राप्त प्रपत्रों की गणना एवं उनके विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों को चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को आधार बनाकर शोध कार्य को आगे बढ़ाया है, अध्ययन में अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षाको पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मतो को जानने हेतु सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को कार्य के प्रगति के अनुकूल पया क्योंकि मुख्यतः सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किसी क्षेत्र में निश्चित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिये किया जाता है। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों के सम्बन्धों, प्रचतिलत व्यवहारों, विश्वास, विचार, दृष्टिकोण से होता है। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि को आधार बनाया गया है।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मतों पर आधारित है। इस शोध में मुजफ्फरनगर शहर के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली द्वारा संचालित विद्यालयों में वर्तमान उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों एवं उसी स्तर पर अध्ययन विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या में वे सभी विद्यालय सम्मिलित है जो कि मुजफ्फरनगर शहर में स्थित है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श पद्धतिः–

प्रस्तुत शोध कार्य में दो पक्ष महत्वपूर्ण है एक शिक्षक एवं दूसरा विद्यार्थी। अतः दोनों ही पक्षों से पृथक–पृथक न्यादर्श लिया गया है। न्यादर्श हेतु द्विस्तरीय यादृच्छिक न्यादर्श पद्धति का प्रयोग किया गया है। शिक्षकों के न्यादर्श चयन हेतु प्रथम स्तर पर यादृच्छिक रूप से कुल 15 स्कूलों का चयन किया जिसमें न स्कूल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (उ.प्र.बोर्ड) एवं शेष 8 स्कूल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) के थे। द्वितीय स्तर में इन विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य में अध्यापन रत कुल 99 शिक्षकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। न्यादर्श में चयनित शिक्षकें का विवरण तालिका 1 व .2 में प्रस्तुत है।

विद्यार्थियों में न्यादर्श चयनित हेतु प्रथम स्तर पर यादृच्छिक रूप से कुल 20 स्कूलों का चयन किया गया है, जिसमें 10 स्कूल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (उ.प्र. बोर्ड) एवं शेष 10 स्कूल केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के थे। द्वितीय स्तर में इन विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य में अध्ययन रत कुल 300 विद्यार्थियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया। न्यादर्श में चयनित छात्रों का विवरण तालिका– 3 व 4 में प्रस्तुत है।

तालिका संख्या – 1
न्यादर्श में चयनित शिक्षकों का विवरण

क्रमांक	विद्यालय का नाम	बोर्ड का नाम	शिक्षकों की संख्या
1	डी.ए.वी. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	10
2	एस.डी. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	10
3	इस्लामियां इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	10
4	एम.एम. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	5
5	राजकीय इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	5
6	एस.डी. कन्या इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	5
7	जैन इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	3
8	डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	5
9	एस.डी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	10
10	डी.डी.वी.एस. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	10
11	केन्द्रीय विद्यालय, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	10
12	होली एंजिल पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	5
13	स्टेपिंग स्टोन पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	5
14	एम.जी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	5
15	जी.आर.आर. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	1
	योग	02	99

तालिका संख्या – 2
न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षकों का वर्गीकरण

क्रमांक	वर्गीकरण		संख्या
1	लिंग के आधार पर	अ–पुरूष	65
		ब–महिला	34
2	वैवाहिक स्थिति के आधार पर	अ–पुरूष	76
		ब–महिला	23
3	निवास के आधार पर	अ–शहरी	73
		ब–ग्रामीण	26
4	अध्ययन विषय क्षेत्र के आधार पर	अ–कला वर्ग	51
		ब–विज्ञान वर्ग	34
		स–वाणिज्य वर्ग	7
		द–व्यावसायिक वर्ग	7
5	वर्ग श्रेणी के आधार पर	अ–सामान्य	39
		ब–अनु.जाति	21
		स–अन. जनजाति	9
		द–अन्य पिछडा वर्ग	30
6	धर्म व्यवस्था के आधार पर	अ–हिन्दु	49
		ब–मुस्लिम	48
		स–सिक्ख	2
7	अध्यापक अनुभव के आधार पर	अ– 0–5 वर्ष	17
		ब– 6–10 वर्ष	37
		स– 11–15 वर्ष	26
		द– 15–20 वर्ष	19
8	आयु के आधार पर	अ– 20–25 वर्ष	12
		ब– 26–30 वर्ष	31
		स– 31–35 वर्ष	16
		द– 36–40 वर्ष	40
9	बोर्ड की स्थिति	अ–यू.पी. बोर्ड	57
		ब–सी.बी.एस.ई. बोर्ड	42
		योग	99

तालिका संख्या – 3
न्यादर्श में सम्मिलित विद्यार्थियों का विवरण

क्रमांक	विद्यालय का नाम	बोर्ड का नाम	शिक्षकों की संख्या
1	डी.ए.वी. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	––
2	एस.डी. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	––
3	इस्लामियां इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
4	एम.एम. इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
5	राजकीय इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
6	एस.डी. कन्या इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
7	जैन इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	––
8	डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
9	एस.डी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
10	डी.डी.पी.एस. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
11	केन्द्रीय विद्यालय, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
12	होली एंजिल पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
13	एम.जी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
14	जी.आर.आर. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
15	एल.जे.पी. सरस्वती विद्यामन्दिर, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
16	वैदिक कन्या पाठशाला इ. कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
17	जैन कन्या इण्टर कालेज, मु.नगर	उ.प्र.बोर्ड	15
18	ग्रीन चैम्बर पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
19	राखी पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
20	जे.वी. पब्लिक स्कूल, मु.नगर	सी.बी.एस.ई.	15
	योग	02	300

तालिका संख्या – 4
न्यादर्श में सम्मिलित विद्यार्थियों का वर्गीकरण

क्रमांक	वर्गीकरण		संख्या
1	लिंग के आधार पर	अ–पुरूष	197
		ब–महिला	103
2	निवास के आधार पर	अ–शहरी	237
		ब–ग्रामीण	63
3	माता–पिता की शिक्षा के आधार पर	अ–कक्षा 5 तक	16
		ब–कक्षा 10 तक	41
		स–स्नातक	145
		द–स्नातक से अधिक	98
4	अध्ययन विषय क्षेत्र के आधार पर	अ–कला वर्ग	85
		ब–विज्ञान वर्ग	160
		स–वाणिज्य वर्ग	80
		द–व्यावसायिक वर्ग	35
5	वर्ग श्रेणी के आधार पर	अ–सामान्य	117
		ब–अनु.जाति	36
		स–अनु. जनजाति	00
		द–अन्य पिछडा वर्ग	127

6	धर्म व्यवस्था के आधार पर	अ–हिन्दु	200
		ब–मुस्लिम	84
		स–सिक्ख	15
7	पारिवारिक मासिक आय के आधार पर	अ– 0–5000	91
		ब– 5000–15000	188
		स– 15000–30000	21
		द– 30000–अधिक	00
8	बोर्ड की स्थिति	अ–यू.पी. बोर्ड	151
		ब–सी.बी.एस.ई. बोर्ड	149
		योग	300

अध्ययन हेतु प्रयुक्त उपकरण

किसी भी शोध समस्या का सफलता पूर्वक अध्ययन शोध उपकरण निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उपकरण के चयन निर्माण एवं प्रयोग में सावधनी बरतनी चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन हेतु आंकड़ें एकत्रित करने के लिए शोधार्थी ने विभिन्न शैक्षिक व मनोवैज्ञानिक उपकरण विक्रेताओं एवं विषय विशेषज्ञ से सम्पर्क किया किन्तु उनके अनुसार प्रस्तुत अध्ययन की उपयोगिता हेतु एवं कोई भी उपकरण उपलब्ध नहीं था। अतः प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी ने निर्माण करने का निर्णय किया।

उपकरण का विकास :–

प्रस्तुत अध्ययन हेतु उपकरण निर्माण हेतु शोधकर्ता ने एक निश्चित योजना बनायी, अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर उससे सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया। प्रतिदर्श के स्वरूप तथा अध्ययन की आवश्यकता को ध्यान में रखकर सामान्य कथनों के रूप में 100 पदों का निर्माण किया गया।

पदों का निर्माण करने में स्वाभानुभव पुस्तकों, शोध–पत्रिकाओं, मित्रों के अनुभव, अन्य सन्दर्भ माध्यमों, शोध पर्यवेक्षक के निर्देशन एवं अन्य अध्यापकों के अनुभवों को आधार बनाया गया। निर्मित मतावली का प्रत्येक पद अध्ययन हेतु चयनित चार आयामों से सम्बन्धित था। मतावली का निर्माण निम्नलिखित चार आयामों पर आधरित था।

I.सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण
II.मनो–शारीरिक दृष्टिकोण
III.शैक्षिक दृष्टिकोण
IV.नैतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण

कथनों को आयामों के क्रम में रखकर एक कथन प्रपत्र तैयार किया गया। इस प्रपत्र में भाषागत एवं विषयगत अशुद्धियों की जांच एवं प्रपत्र सम्बन्धित विषय–विशेषज्ञ की राय एवं परामर्श प्राप्त करने हेतु विभिन्न विद्धानों एवं शोध निर्देशकों से विचार–विमर्श किया। इस प्रकार प्राप्त सुझावों के आधार पर कुल 25 पदों को निरस्त कर दिया गया एवं 63 पदों में प्रमुख तथा 12 पदों में भाषागत संशोधन किये गये। 75 पदों में से 18 पदों में विभिन्न दृष्टिकोणों से संशोधन एवं परिमार्जित किये गये।

इस प्रकार कुल 57 पदों की एक सूची तैयार की गयी एवं उन्हें विचारार्थ विभिन्न विद्धानों के समक्ष प्रस्तुत करके पर ज्ञात हुआ कि उनमें कुल 4 पदों की विषय–वस्तु लगभग समान थी, एवं 6 पद सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप में लगभग समान विचार को व्यक्त करते थे। अतः कुल 10 पदों को निरस्त किया गया तथा कुल 38 पदों की मतावली का निर्माण किया गया तैयार यौन–शिक्षा मतावली का विद्यालयों में जाकर शिक्षकों एवं 50 छात्र–छात्राओं पर पूर्व–परीक्षण किया गया जिससे यह जानने का प्रयास किया कि उन्हें किन प्रश्नों का उत्तर देने में कठिनाई हो रही है, पूर्व–परीक्षण में शिक्षको तथा छात्र–छात्राओं द्वारा अनुभव की गयी कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए विचार–मापनी में पुन सुधार किये गये।

अन्तिम प्रारूप में सार्वाधिक व्यापक शुद्ध एवं उपयुक्त 38 पदों का चयन किया गया, भाषातग अशुद्धियों के निराकरण एवं कुछ कथनों में संशोधन कर पर्यवेक्षक में यौन–मतावली का अन्तिम प्रारूप शोधार्थि द्वारा बनाया गया।

यद्यपि मतावली में प्रस्तुत सब पद समान थे, किन्तु प्रशासन व समंकों के संकलन की सुविधा की दृष्टि से मतावली को दो भागों में विभक्त कर दिया गया, प्रथम भाग जिस पर कोड– अंकित था, का प्रयोग विद्यार्थियों के मतों के संकलन मे, तथा द्वितीय भाग जिस पर कोड ज अंकित किया गया था, का प्रयोग शिक्षकों के मतों को संकलन में किया गया।

उपकरण का स्वरूप

प्रस्तुत मतावली को यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति विचार–निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाने वाले 4

आयाम लिये गये जो निम्नलिखित हैः–

i.सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण
ii.मनोशारीरिक दृष्टिकोण
iii.शैक्षिक दृष्टिकोण
iv.नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण

उक्त आयाम में कुछ पद सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करने वाले एवं कुछ नकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त करने वाले है। मतावली में सम्मिलित समस्त पदों का उक्त आधार पर वर्गीकरण एवं सूची तालिका में प्रस्तुत है, उत्तरदाताओं से उनके विचार प्रत्येक कथन के समक्ष सहमत असहमत में से किसी पर सही का निशान अंकित करके प्राप्त किये गये।

तालिका संख्या– 5
विभिन्न आयामों से सम्बन्धित सूची–तालिका

क्र स.	आयाम	सकारात्मक/ नकारात्मक	पद क्रम संख्या	कुल पद
1	समाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण	सकारात्मक	1,9,11,13,23	5
		नकारात्मक	7,19,34,29,36	5
2	मनोशारीरिक दृष्टिकोण	सकारात्मक	6,15,21,35	4
		नकारात्मक	3,12,17,25,31	5
3	शैक्षिक दृष्टिकोण	सकारात्मक	4,18,20,24,26,28,32,33,37	9
		नकारात्मक	8,14	2
4	नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण	सकारात्मक	2,10,16,38	4
		नकारात्मक	5,22,27,30	4
			योग	38

उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता

प्रयुक्त मतावली की विश्वसनीयता के दृष्टिकोण से मतावली में प्रयुक्त पदों की संख्या प्रत्येक आयाम में 8 से 11तक रखी गयी जो पर्याप्त रूप से अधिक है। मतावली की विश्वसनीयता का आंकलन मतावली के वास्तविक प्रशासन के पश्चात भी किया गया है ताकि मतावली की विश्वसनीयता के सम्बन्ध में पूर्णतया आश्वस्त हुआ जा सकें।

विश्वसनीयता का आंकलन सम–विषम विधि द्वारा अर्द्ध–विच्छेद पद्धति से किया गया एवं इस विधि द्वारा मतावली का विश्वसनीयता गुणांक .84 प्राप्त हुआ। जोकि प्रयुक्त मतावली की उच्च विश्वसनीयता का परिचायक है।

मतावली का प्रारूप एवं विकास प्रक्रिया (प्रत्येक स्तर पर विशेषज्ञों से विचार विमर्श एवं पूर्व परीक्षण द्वारा) स्वतः ही मतावली की रूप वैधता (Face Validity), पूर्वगत वैधता (Prediction Validity), अन्वय वैधता (Concurent Validity) को सुनिश्चित करते है। जबकि उपकरण की रूप वैधता मतावली के प्रारूप द्वारा सुनिश्चित की गयी, उपकरण की पूर्वगत एवं अन्वय वैधता विद्धनों से विचार विमर्श कर सुनिश्चित की गयी। वे शिक्षक जिन पर इस मतावली का प्रशासन किया गया वे भी शोधार्थि के लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में प्रयुक्त उपकरण के प्रयोग से आश्वस्त दिखे।

उपकरण का प्रशासन–

प्रदत्तों के संकलन हेतु ''यौन शिक्षा मतावली'' कोड–ै का प्रयोग विद्यार्थियों हेतु एवं ''यौन शिक्षा मतावली कोड–ज का

प्रयोग शिक्षक हेतु किया गया है। शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों में जाकर शिक्षकों तथा छात्र–छात्राओं से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर आँकडों का संग्रह किया गया। प्रदत्तों की प्राप्त करने हेतु यौन शिक्षा मतावली शिक्षकों एवं छात्र/छात्राओं को दी गयी तथा उनसे सम्बन्धित निर्देश, नियम एवं सावधानियों से शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को अवगत कराया गया तथा कहा गया यदि उन्हें कोई समस्या हो तो वह शोधकर्ता से पूंछ लें। साथ ही यह भी कहा गया कि दिये गये कथनों में से कोई भी कथन सही/गलत अभिप्राय व्यक्त नहीं करता, जिस विकल्प को वे उचित समझे उस पर सही का निशान लगायें। शिक्षकों और विद्यार्थियों से यह भी कहा गया कि उनके द्वारा दिये गये उत्तरों को गुप्त रखा जायेगा और उनका प्रयोग केवल शोध कार्यो हेतु होगा।

प्रदत्तों का फलांकन एवं सूची

अध्ययन में सम्मिलित शिक्षकों तथा छात्र–छात्राओं द्वारा भरी गयी प्रश्नावली में प्राप्तांकों की गणना के लिए 1,2 अथवा 3 अंका दिये गये प्रतिदर्श का अंकन सकारात्मक पद हेतु निम्नवत् किया गया।

कथन पर सहमति के लिए–3
कथन पर अनिश्चित के लिए–2
कथन पर असहमत के लिए–1

नकारात्मक पदों पर अंकन की प्रक्रिया पदों पर अंकन की सकारात्मक पदों की प्रक्रिया के विपरीत निम्नवत् थी–

कथन पर सहमति के लिए–1
कथन पर अनिश्चित के लिए–2
कथन पर असहमत के लिए–3

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण–

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्ता ने परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं निष्कर्ष प्राप्त हेतु निमन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने प्राप्त आंकडों को सारणीय कर आंकडो को प्रतिशत में बदलने में तथा निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु प्रतिशत सांख्यिकीय का प्रयोग किया गया–

$$\text{प्रतिशत } (\%) = \frac{\text{प्राप्तांक } X\ 100}{\text{पूर्णांक}}$$

मध्यमान–

$$\text{मध्यमान } (x) = A.M. + \frac{?\ fdx}{N}\ x\ i$$

मानक विचलन–

$$\text{मानक विचलन } (\sigma) = v\frac{?\ fd^2}{N} - \frac{(?\ fd)}{N}^2$$

टी–मान :–

$$C.R./T\text{- मान} = \frac{M_1 \sim M_2}{\sigma_D}$$

$$\sigma_D = \sigma m_1^2 + \sigma m_2^2$$

$$\sigma_{m1} = \frac{v\ \sigma_1^2}{N_1}, \quad \sigma_{m1} = \frac{v\ \sigma_2^2}{N_2}$$

आंकडों का विश्लेषण एवं विवेचनः–

प्रस्तुत अध्ययन के उददेश्यों की पूर्ति हेतु विभिन्न आयामों पर आधारित एवं समग्र रूप में विद्यार्थी एवं शिक्षकों के मतो का विश्लेषण करने हेतु शोद्यार्थी द्वारा प्राप्त आंकडों न्यूनतम से अधिकतम स्कोर के आधार पर तीन वर्ग्रों में विभक्त किया गया। जिसमें

न्यूनतम 33% स्कोर नकारात्मक दृष्टिकोण, जबकि अधिकतम 33% स्कोर सकारात्मक दृष्टाकोण को परिलक्षित करते है। जबकि शोद्यार्थी के विश्लेषण के अनुसार शेष 34% स्कोर तटस्थ दृष्टिकोण को परिलक्षित करते है।

इस आधार पर कुल सम्भावित स्कोर को तालिका 2 के अनुसार वर्गीकृत किया गया है।

तालिका संख्या– 6

यौन–शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न आयामों पर छात्रों का प्रतिशतीय (%) निरूपण

क्र स	आयाम	पदों की संख्या	सम्भावित स्कोर		प्राप्त स्कोर का दृष्टिकोण में वर्गीकरण	प्रतिशतीय (%) निरूपण
1	समाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण	10	न्यूनतम	अधिकतम	नकारात्मक दष्टिकोण 10–16	33.33–53.33
			10	30	तटस्थ दृष्टिकोण 17–23	56.66–76.66
					सकारात्मक दृष्टिकोण 24–30	80.00–100.00
2	मनोशारीरिक दृष्टिकोण	09	09	27	नकारात्मक दष्टिकोण 09–14	33.33–51.85
					तटस्थ दृष्टिकोण 15–21	55.55–77.77
					सकारात्मक दृष्टिकोण 22–27	81.48–100.00
3	शैक्षिक दृष्टिकोण	11	11	33	नकारात्मक दष्टिकोण 11–18	33.33–54.54
					तटस्थ दृष्टिकोण 19–25	57.57–75.75
					सकारात्मक दृष्टिकोण 26–33	78.78–100.00
4	नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण	08	08	24	नकारात्मक दष्टिकोण 08–13	33.33–54.16
					तटस्थ दृष्टिकोण 14–18	58.33–75.00
					सकारात्मक दृष्टिकोण 19–24	79.16–100.00
	समग्र दृष्टिकोण	38	38	114	नकारात्मक दष्टिकोण 38–63	33.33–55.26
					तटस्थ दृष्टिकोण 64–88	56.14–77.19
					सकारात्मक दृष्टिकोण 89–114	78.07–100.00

तालिका संख्या– 7

यौन शिक्षा के पाठयक्रम में शामिल करने के प्रति विद्यार्थियों का मत

क्र0सं0	आयाम	सकारात्मक		तटस्थ		नकारात्मक	
		N	%	N	%	N	%
A	सामा0 आर्थिक दृष्टिकोण	234	78.00	63	21.00	03	1
B	मनोशारीरिक दृष्टिकोण	211	70.00	89	29.67	NILL	0
C	शैक्षिक दृष्टिकोण	234	78.00	66	22.00	NILL	0
D	नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण	207	69.00	89	29.67	04	1.33
	स्मग्र दृष्टिकोण	251	83.67	49	16.33	NILL	0

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण–

यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के समग्र दृष्टिकोण से कुल 83.67% छात्र सहमत, 16.33% छात्र तटस्थ एवं कोई भी छात्र इसके प्रति असहमत नहीं है।

उर्पयुक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकालता है, कि अधिकांश छात्र उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जान के विचार से सहमत है।

तालिका संख्या– 8
यौन शिक्षा के पाठयक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षको का मत

क्र.सं.	आयाम	सकारात्मक		तटस्थ		नकारात्मक	
		N	%	N	%	N	%
A	सामा0 आर्थिक दृष्टिकोण	86	87.87	12	12.12	01	1.05
B	मनोशारीरिक दृष्टिकोण	82	82.83	15	15.15	02	2.02
C	शैक्षिक दृष्टिकोण	89	89.90	09	09.09	01	1.05
D	नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण	86	86.87	12	12.12	01	1.05
	समग्र दृष्टिकोण	92	92.92	07	07.07	01	1.05

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों का मत–

यौन शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम के रूप में शिक्षकों का समग्र मत 92.92% सकारात्मक 07.07% शिक्षक तटस्थ एवं 1.01% शिक्षक नकारात्मक सोच रखते है।

इस आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षक यौन–शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर शामिल किये जाने के विचार के प्रति सकारात्मक एंव स्वस्थ दृष्टिकोण रखते है।

तालिका संख्या– 9
यौन शिक्षा को पाठयक्रम में शामिल करने के प्रतिविद्यार्थियों एवं शिक्षकों के मतो में अन्तर

क्र.सं.	आयाम	शिक्षक **N=99**		विद्यार्थी **N=300**		**t**
		Mean (X)	S.D. **(σ)**	Mean (X)	S.D. **(σ)**	
A	सामा0 आर्थिक दृष्टिकोण	25.535	2.459	25.333	2.986	670*
B	मनोशारीरिक दृष्टिकोण	23.354	2.83	22.803	2.715	1.697*
C	शैक्षिक दृष्टिकोण	28.999	2.813	27.04	2.668	4.718**
D	नैतिक–अध्यात्मिक दृष्टिकोण	21.131	2.633	19.77	2.471	4.527**

0.01 स्तर पर सार्थक नही।
0.05 स्तर पर सार्थक।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित आयाम पर शिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान 25.535 है, एंव छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 25.333 है, जबकि मानक विचलन क्रमशः 2.459 ण्चं 2.986 है। मध्यमानों से स्पष्ट है कि शिक्षकों का स्तर माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति दृष्टिकोण छात्रो की तुलना में अधिक सकारात्मक है। उपरोक्त तालिका में क्रान्तिक मान 0.670 है जो कि 0.5 स्तर पर सार्थक है।

निष्कर्षतः परिकल्पना, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

मनो–शारीरिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित आयाम पर शिक्षकों के प्राप्तांकों का अध्ययन मध्यमान 23.354 तथा छात्रो के प्राप्तांकों का मध्यमान 22.803 है, जबकि मानक विचलन क्रमशः 2.830 एंव 2.715 है, मध्यमानों से यह स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति शिक्षकों का मत छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक है।

उपरोक्त तालिका में क्रान्तिक मान 1.697 प्राप्त होता है, जो कि 0.05 स्तर सार्थक है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। मनो–शारीरिक दृष्टिकोण से यौन–शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के प्रति शिक्षकों एवं छात्रों के विचारो में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक दृष्टिकोण से सम्बन्धित आयाम पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के मत पर शिक्षको के प्राप्ताकों का मध्यमान 28.919 तथा छात्रों के प्राप्ताकों का मध्यमान 27.4 है, जबकि मानक विचलन क्रमशः 2.813 तथा 2.668 है, मध्यमानों से स्पष्ट है कि शैक्षिक दृष्टिकोण यौन–शिक्षा कों पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। तालिका में क्रान्तिक मान 4.718 है जो कि 0.1 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शैक्षिक दृष्टिकोण से यौन–शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

नैतिक–आध्यात्मिक स्तर पर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के प्रति शिक्षकों के प्राप्तांकों का मध्यमान 21.131 तथा छात्रों के प्राप्ताकों का मध्यमान 19.77 है कि जबकि तमानक विचलन 2.633 तथा 2.471 है, मध्यमानों स्पष्ट है कि नैतिक–आध्यात्मिक मत से उच्चतर मायध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के प्रति शिक्षको की राय छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। तालिका में क्रान्तिक मान 4.527 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। लेकिन 0.05 स्तर पर सार्थक है, अतः नैतिक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से यौन–शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के प्रति छात्रों एवं शिक्षकों के मतो में अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या– 10
यौन शिक्षा को पाठयक्रम में शामिल करने के प्रतिविद्यार्थियों एवं शिक्षकों के सम्पूर्ण मतों का तुलनात्मक अध्ययन।

समूह	संख्या	मध्यमान **(x)**	मानकविचलन **(σ)**	क्रान्तिक अनुपात**(C.R.)**
शिक्षक	99	98.939	8.769	3.664*
विद्यार्थी	300	95.307	7.869	

0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रतिशिक्षकों एवं विद्यार्थियों के समग्र दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन–

तलिका सं0 4.5 के निरीक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने के मतो से शिक्षकों के प्राप्ताकों का मध्यमान 98.939 एवं छात्रों का प्राप्तांको 95.307 है, जबकि मानक विचलन क्रमशः 8.769 एंव 7.862 है।

मध्यमानों से यह स्पष्ट है कि यौन–शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सम्मिलित करने के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। तालिका में क्रान्तिक मान 3.664 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः परिकल्पना अस्वीकार की जाती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम मे ंसम्मिलित करने के प्रति शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के विचारों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षको एवं विद्यार्थियों के मतों पर आधारित है।'' संकलित प्रपत्रों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं क्रमबद्ध विश्लेषण करने के पश्चात अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत अध्ययन में निम्नवत् है–

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम शामिल कियो जाने के मतों से 92.92% शिक्षक सहमत, 07.07% तटस्थ एवं 1. 01% शिक्षक असहमत है, उपर्युक्त विवरण से निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश शिक्षण यौन–शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर शमिल किये जाने विचार के प्रति सहमत है।

2.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के मतों से कुल 83.67% छात्र सहमत, 16.33% तटस्थ एवं कोई भी छात्र असहमत नहीं है। विवेचना स्वरूप कहां जा सकता है कि अधिकांश छात्र यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सकारात्मक सोच रखते है।

3.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रममें शामिल किये जाने के प्रति सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण से कुल 86.87ः शिक्षक इस मत से सहमत, 12.12% तटस्थ एवं 1.05% शिक्षक इस उपागम के प्रति नकारात्मक मत रखते है। निष्कर्षतः सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण पर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षक सहमत है।

4.उ. मा. स्तर पर पाठ्यक्रम पर शैन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सा.–आ. दृष्टिकोण से विद्यार्थिया के दृष्टिकोण 78% छात्र सकारात्मक, 21% तटस्थ तथा 01% छात्र इसके विपरीत है। विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यार्थी सा.–आ. आधार से उ.मा. स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिलकरने के प्रति सहमत है।

5.यौन–शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षक मनोशारीरिक उपागम से कुल 82.83% शिक्षक सहमत, 15.15% तटस्थ, 2.02% शिक्षक इस दृष्टिकोण से असहमत है। अवलोकन से निष्कर्ष निकलता है कि मनो–शारीरिक दृष्टिाकोण पर शिक्षक यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सहमत है।

6.मनो–शारीरिक आयाम से विद्यार्थी यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति 70.33% सहमत, 29.67% तटस्थ एवं कोई भी छात्र यौन–शिक्षा के प्रति असहमत नहीं है।

निरीक्षणों से यह ज्ञात होता है कि मनो–शारीरिक दृष्टिकोण पर ज्यादा तर विद्यार्थी उच्चतर मायमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सहमत है।

7.यौन–शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में शामिल करने से प्रति शैक्षिक आयाम पर शिक्षकों का विचार 89.90ः शिक्षक सहमत, 09.09% तटस्थ एवं 1.05% असहमत

निष्कर्ष स्वरूपः शिक्षक, शैक्षिक दृष्टिकोण पर माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सकारात्मक सोच रखते है।

8.शैक्षिक आयाम पर विद्यार्थी यौन–शिक्षा को माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में शामिल करने का 78% सकारात्मक, 22.00% तटस्थ तथा कोई भी छात्र असहमत नहीं है।

तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति अधिकांश छात्र सहमत है।

9.नैतिक–आध्यात्मिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति शिक्षको को दृष्टिकोण 86.87% सहमत, 12. 12% तटस्थ तथा 1.01% असहमत। उपर्युक्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि ज्यादातर शिक्षक नैतिक–आध्यात्मिक स्तर पर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सहमत है।

10.नैतिक–आध्यात्मिक दृष्टि से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण 69% सहमत, 29.67% तटस्थ, एवं 1.33% असहमत। इस आयाम पर अधिकांश विद्यार्थी नैतिक–आध्यात्मिक स्तर यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने के प्रति सकारात्मक मत रखते है।

शैक्षिक निहितार्थ–

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो को शैक्षिक उपादेशता अग्रलिखित प्रस्तुत है–

1.यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके युवाओं को उनमें होने वाले विभिन्न विसंगतियों से बचाया जा सकेगा।

2.यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करके युवा वर्ग में होने वाले विभिन्न मनो–दैनिक परिवर्तनों को समुतचित जानकारी के द्वारा उनके विकास को उचित दिशा–प्रदान की जा सकेगी।

3.यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करके इसके प्रति समाज में व्याप्त विभिन्न भ्रामक–भ्रान्तियों की यौन–शिक्षा के माध्यम से दूर

किया जा सकेगा।
4.शिक्षकों एवं छात्रों में यौन–शिक्षा के सामाजिक, मनो–वैज्ञानिक एंव वैज्ञानिक दृष्टिकोण दृष्टिकोण का विका सम्भव हो सकेगा।
5.यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने से युवाओं के मानसिक एवं संवेगात्मक विकास को उचित दिशा दी जा सकेगी।
6.यौन–शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में जनसंख्या एवं परिवार नियोजन के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण के विकास में सहायता मिलेगी।
7.किशोरावस्था में बालक एवं बालिकाओं मं होने वाले ''यौन–सम्बन्धी विकास क्रम से उन्हें भलीभांति अवगत करा देना चाहिए। यदि इस सम्बन्ध में वे कोई शंका प्रस्तुत करते है, तो सामूहिक या व्यक्तिगत चर्चा द्वारा उसका निराकरण करना चाहिये।
यौन–सम्बन्धी ज्ञान देने का दायित्व विद्यालय व शिक्षक का ही होना चाहिए, किन्तु यौन–शिक्षा का अध्यापन कार्य बडे ही कुशल, बुद्धिमान एवं अनुभवी शिक्षक द्वारा ही होना चाहिए। इसके लिये ऐसा शिक्षक हो जो बालको के विश्वास एंव सम्मान प्राप्त कर सके तथा जिसके समक्ष बालक अपनी यौन–सम्बन्धी समस्याओं एंव भवनाओं को निःसंकोच व्यक्त कर सके। शिक्षा में भी इन समस्याओं को समस्याओं को समझाने व उनका निवारण करने की सहज बुद्धि हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.राय, पारसनाथ (2002) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
2.सिंह, ए.के. (2006)मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा के शोध विधियां, बंगलों रोड, दिल्ली।
3.सिंह, ए.के. (2007)शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, नई दिल्ली।
4.गांधी–महात्मा (1936) मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–14।
5.पाठक, पी.डी. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6.पाठक, पी.डी., त्यागी शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7.जी.एस.डी. (1998)
8.माथुर, एम.एस. (2007) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9.सारस्वत, मालती (2005) शिक्षा मनोविज्ञान, आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
10.सारस्वत, मालती एवं बाजपेयी भारतीय शिक्षा का इतिहास व समस्यायें, एल.बी. (2006) आलोक प्रकाशन, इलाहाबाद।
11.वत्स, महिन्दर, सी (1997) भारतीय किशोरों में यौन सम्बन्धी समस्यायें एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली।
12.मराल, गार्गी शरण मिश्र (2003) यौन शिक्षा की समस्या और समाधान, विकास प्रकाशन, कानपुर।
13.वर्मा, निर्मल (2006)स्वास्थ्य शिक्षा, ओमेगा पब्लिकेशनन्स, नई दिल्ली।
14.साठे ए.जी. (1998)यौन शिक्षा की स्कूली स्तर की शुरूआत, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली।
15.नन्दा, एन.एल. (1997) भारतीय किशोरों में यौन सम्बन्धी समस्याएँ, एन.सी.आर.ई.टी., नई दिल्ली।
16.अरूल राज यामिनी (1983) एजूकेशनल रिव्यू।
17.भारतीय परिवार नियोजन संगठन (1992) एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली।
18.अर्चना (2003) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यौन शिक्षा की आवश्यकता, सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर, (अप्रकाशित)।
19.हिन्दुस्तान (2005) अब छात्रों को पढाया जायेगा यौन शिक्षा का पाठः हिन्दुस्तान नई दिल्ली, 11.09.2005, पृ. 10।
20.गुप्ता अशोक (2006)स्कूलों में शुरू हो सेक्स शिक्षा, अमर उजाला, (सम्पादक), नई दिल्ली, पृ. 9।
21.जनसत्ता (2006) यौन शिक्षा में खुलकर बात–चीत करने में हिचकते शिक्षक, जनसत्ता, (सम्पादक), नई दिल्ली, 26 मई, 2006।
22.कुमारः (2006) दिल्ली विश्व विद्यालय में यौन शिक्षा पर सार्टिफिकेट कोर्स, नवभारत टाइम्स (सम्पादक), 10 जनवरी, 2006, पृ. 3।
23.चक्रवर्ती, गार्गी (2006) यौन शिक्षा स्कूलों से ही अनिवार्य कर दी जाय, राष्ट्रीय सहारा (सम्पादक), नई दिल्ली, 25 जनवरी, 2006।
24.स्वरूप, देवेन्द्र (2006) यौन शिक्षा से उच्छृंखलता बढने का खतरा, राष्ट्रीय सहारा (सम्पादक), नई दिल्ली, 21 जनवरी, 2006।
25.रोहतगी, अनु जैन (2006) स्कूलों में यौन शिक्षा देने के तैयारी आखिरी दौर।
26.दूरदर्शन (2005) खामोशी क्यों, दूरदर्शन–1, बुधवार रात्रि 10:00 बजे, नई दिल्ली।
27.Buch, M.B. (1978-83): Third survey of Research in Education.
28.Garret, H.E. (1985):Statistics is psychology and Education, calumbia University, Eleventh. India Reprint,1985.
29.Home Minstry's National Vionience on Women A Report. Crime Records Bureau (1992)
30.Kothari,P. (1986) The Need of Sex Education for Adolescene in india , N.C.E.R.T., New Delhi.
31.Lal, R.S. (1995) Adolescence Sex Education, Paper presentedat the first National seminar held by NCERT, New Delhi.
32.Mulley,D.S. (1996)Adolescence Education,NCERT,New Delhi
33.Mukhi, Saria (1984) Problem in Adolescence Sexulity.FPAI Publication, Hong-Kong.
34.Mukhi, Saria (1984) Problem in Adolescence Sexulity.FPAIPublication,Hong-Kong.
35.Rai, Somnath (1995)Adolescence Education, National Seminar, New Delhi, National Population Education Progoramme School and Non formal Education.
36.Reddy, D.Narayan (1989) Foliow of Report on Urban (Madras) College, Student Attitudes Towards sex.

(Unpublished)
37.Sathe, A.G. (1984) The Adolescent in India: A Status Report Paper presented at the Workshop on " Adolescent Fartility Managemnt in Asia and Pacific, Manila
38.sathe, A.G.(1992)Issues and Problems in Intrducing Family LifeEducation for Boys and Girls of Secondary Schools. The Journal of Family welfare.
39.Sathe, A.G.(1990)Approachary in Introducing Sax Education in Secondary Schools in Pune, Paper Presented at Hong Kong, Sexuality Conference.
40.Valentive,C.W.(1957)Psychology and its Bearing on Education, London.
41.Wasts, M.C. (1991) Family Life Education Chpater included in Populished Education- A National Source Book PolIshed by NCERT, New Delhi,

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net